

परिवर्तनशील भारतीय समाज में शिक्षा की भूमिका

डॉ. निधि शुक्ला

संविदा सहायक प्राध्यापक शिक्षा संकाय

अणु प्रो सिंह विश्वविद्यालय रीवा

प्रस्तावना :-

किसी भी देश की सामाजिक स्थिति उसके शैक्षिक तथा नैतिक मूल्यों में आश्रित होती है। हमारा भारतीय समाज हमारे शैक्षिक तथा नैतिक मूल्यों को परिलक्षित करता है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था विश्व की पुरातन शैक्षिक व्यवस्था है, जो ईसा मसीह के जन्म से 1200 वर्ष पूर्व वैदिक कालीन युग में वर्णित है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार भारतीय संस्कृति एक अद्वितीय अविस्मरणीय व अनुकरणीय है शिक्षा का उद्देश्य इस सामाजिक संस्कृति को आगे की पीढ़ी में ले जाने में सहयोगी होना चाहिये, यदि शिक्षा इस प्रकार के कार्य को करने में सफल होती है, तभी एक आदर्श समाज की परिकल्पना साकार हो सकेगी। यह निश्चय है कि समय के साथ सामाजिक परिवर्तन अवश्य होंगे लेकिन ये परिवर्तन इतने विघटन तथा विनाशकारी हो जायें जिससे हम मानवता, राष्ट्रियता, यथार्थ आदर्श और सभ्यता को ही भूल जाए तो निश्चित ही यह समाज को दिशाहीन तथा पतित कर देगा। इसके लिये शिक्षा को अवलम्ब बनाकर प्रयास ही एक मात्र उपाय हो सकता है।

इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ से विश्व के अनेक देशों की भाँति भारतीय समाज में भी तेजी से परिवर्तन दृष्टिगत हो रहे हैं। इसमें तकनीकी उपकरणों तथा जीवन के अन्धाधुंध संघर्षों की प्रमुख भूमिका है। आज यहाँ समाज में मार्यादा, नैतिकता, आदर का भय धीरे-धीरे नष्ट होते जा रहे हैं, ऐसी स्थिति में हमें केवल अपने प्रत्येक शैक्षिक स्तर पर शैक्षिक व्यवस्था का पुनर्संगठन कर समाज को सही दिखवाने का प्रयास करना होगा।

उद्देश्य :-

- (1) वर्तमान भारतीय समाज के नैतिक मूल्यों का ऑकलन करना।
- (2) शिक्षा को इस स्थिति में अनुकूलन हेतु सुधारों की समीक्षा करना।

परिकल्पना :-

- (1) भारतीय सामाजिक स्थितियाँ तेजी से अपने मूल प्रकृति को विलोपित करती जा रही है।
- (2) वर्तमान में ग्रामीण तथा शहरी सामाजिक स्थितियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

- (3) शिक्षा के द्वारा भारतीय परिवर्तनशील सामाजिक परिस्थितियों के प्रति उत्तरदायी बनने की बहुत अधिक आवश्यकता है।

न्यादर्श :-

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत इस शोध पत्र में न्यादर्श के रूप में 10 शिक्षाविद, 10 समाज सुधार के प्रति संलग्न प्रतिनिधि, 10 परिवार के मुखिया, 10 शिक्षण संस्थानों के प्रतिनिधि एवं 10 छात्र-छात्राओं को शामिल किया गया है।

शोध विधि :-

इस शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण :-

शोध उपकरण के रूप में साक्षात्कार प्रपत्र तथा अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुतीकरण :-

शोधार्थी द्वारा अपने शोध सर्वेक्षण कार्य में प्रयोग किये गये विभिन्न शोध उपकरणों से प्राप्त प्रमुख शीर्षकों में आँकड़े निम्नांकित तालिकाओं में दर्शाये गये हैं। इसके पश्चात् इन आँकड़ों का विश्लेषण तथा व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

तालिका क्र.-1

भारतीय सामाजिक स्थितियों के नकारात्मक दिशागामी होने के प्रति न्यादर्श दृष्टिकोण

क्र.	न्यादर्श का स्वरूप	सहमत		असहमत	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	शिक्षाविद्	8	80%	2	20%
2.	समाज सुधारक	8	80%	2	20%
3.	परिवार प्रमुख	9	90%	1	10%
4.	शिक्षक	7	70%	3	30%
5.	विद्यार्थी	5	50%	5	50%
	कुल	37	74%	13	26%

विश्लेषण एवं व्याख्या :- शोधार्थी द्वारा यह ज्ञात करने पर कि क्या वास्तव में भारतीय सामाजिक परिस्थितियाँ नकारात्मक दिशा की ओर जारी हैं, 80 प्रतिशत शिक्षाविद् तथा इतने ही समाज सुधार को ने यह स्वीकार किया कि हमारे देश में सामाजिक स्थितियाँ तेजी से प्रतिकूल हो रही हैं, विशेष बात यह है कि 90 प्रतिशत परिवार प्रमुख व 70 प्रतिशत शिक्षक भी इसमें सहमत हैं। किन्तु 50 प्रतिशत

विद्यार्थी इसके पक्ष तथा 50 प्रतिशत विद्यार्थी इसके विपक्ष में दिखाई दिये अधिकांश विद्यार्थी इसे सामान्य मानते हैं।

तालिका क्र.-2

सामाजिक बदलाव के प्रमुख घटक

क्र.	न्यादर्श का स्वरूप	सहमत		असहमत	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	समय के अनुसार परिवर्तन	46	92%	04	8%
2.	पाश्चातीकरण	37	74%	13	26%
3.	तकनीकी संसाधनों का दुरुपयोग	49	98%	01	2%
4.	परिवार एवं संस्थाओं में स्वच्छरीकरण नियंत्रण का अभाव	44	88%	06	12%

विश्लेषण एवं व्याख्या :- उपरोक्त तालिका क्र. 2 के अनुसार न्यादर्श में चयनित 92 प्रतिशत तथा 74 प्रतिशत इस सामाजिक परिवर्तन को समय तथा पाश्चात्य संस्कृति का कारण बताते हैं। लगभग शत प्रतिशत लोगों का कथन है कि मीडिया जिसमें टेलीविजन, मोबाइल शामिल है, सामाजिक विकृतियों का पूर्ण रूपेण क्रियाकरक है। इसके माध्यम से भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता को तेजी से नष्ट किया जा रहा है, आज इन तकनीकी साधनों के पुनः निरीक्षण तथा इसमें सख्ती की आवश्यकता है। 88 प्रतिशत न्यादर्श का मत है कि शिक्षण संस्थाओं और परिवारों में अनुशासन लगभग समाप्त होता जा रहा है, जिसके फलस्वरूप आगे की पीढ़ी अनियंत्रित तथा असामाजिक होती जा रही है।

तालिका क्र.-3

सामाजिक स्थितियों को सकारात्मक दिशा में ले जाने के लिये शिक्षा के किस स्वरूप में परिवर्तन की आवश्यकता है -

क्र.	न्यादर्श का स्वरूप	सहमत		असहमत	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	पाठ्यक्रम पर आधारित	46	92%	04	8%
2.	पाठ्य सहगामी क्रियाकलाप पर आधारित	49	98%	02	4%
3.	पाठ्येत्तर क्रियाकलाप पर आधारित	41	82%	09	18%

विश्लेषण एवं व्याख्या :- उपरोक्त तालिका क्र. 3 के आँकड़ों के अनुसार वर्तमान में शिक्षा का प्रत्येक स्वरूप अर्थात् पाठ्यक्रम पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों तथा पाठ्येत्तर क्रियाकलाप में परिवर्तन की आवश्यकता है। प्रत्येक विद्यालयों में संचालित ये गतिविधियाँ देशभक्ति, आदर्श, नैतिक, भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति की पोषक व वाहक होनी चाहिए। शिक्षा के अधोसंरचना में समयानुसार सुधार आवश्यक है।

तालिका क्र.-4
सामाजिक सुदृढ़ता हेतु शैक्षिक आवयवों के प्रकार

क्र.	शैक्षिक मूल तत्व	सहमत		असहमत	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	व्यवहारिक ज्ञान	45	90%	05	10%
2.	नैतिक ज्ञान	48	96%	02	4%
3.	भारतीय दर्शन	23	46%	27	54%
4.	उच्च सामाजिक संस्कार	41	82%	09	18%
5.	विकृति सामाजिक संरचना के दुष्परिणाम	37	74%	13	26%

विश्लेषण एवं व्याख्या :- उपरोक्त तालिका क्र. 4 के आँकड़ों के अनुसार 90 प्रतिशत न्यादर्श हेतु चयनित व्यक्तियों का अभिमत है कि शिक्षा में व्यवहारिक ज्ञान की वृद्धि देने की व्यवस्था होनी चाहिए। सर्वाधिक 96 प्रतिशत लोगों ने नैतिक ज्ञान तथा 82 प्रतिशत से उच्च सामाजिक संस्कारों के ज्ञान को शिक्षा में शामिल करने पर अपना मत दिया। 74 प्रतिशत लोगों का कथन था कि पाठ्यक्रम तथा अन्य क्रियाकलापों में विभिन्न उदाहरणों के द्वारा विद्यार्थियों को यह बताना आवश्यक है कि तेजी से विकृत हो रही सामाजिक संरचना के परिणाम कितने अहितकारी होंगे।

निष्कर्ष :-

- (1) इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से वर्तमान तक भारतीय सामाजिक स्थिति में तेजी से परिवर्तित हुई है।
- (2) इस परिवर्तन के फलस्वरूप भारत की मूल सामाजिक स्थिति अपने आदर्शों से विमुख हो रही है।
- (3) वर्तमान में उपयोग आ रहे मोबाइल तथा टीवी के कार्यक्रम भारतीय मर्यादाओं को छिन्न भिन्न कर रहे हैं।
- (4) शिक्षण संस्थाएँ तथा परिवार नैतिक मूल्यों के विकास के प्रति उदासीन है।

- (5) वर्तमान शिक्षा व्यवस्था छात्रों के सर्वांगीण विकास के प्रति असफल है, इसके पुनरीक्षण एवं सुदृढीकरण की आवश्यकता है।

सुझाव :-

- (1) शिक्षा में स्वदेशी भाव विकसित करने का प्रयास होना चाहिये क्योंकि शिक्षा ही इस सामाजिक पतन को संयमित करने का एक मात्र संसाधन है।
- (2) प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर चरित्र निर्माण, नैतिकता पर आधारित शिक्षा पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।
- (3) टी.वी. पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में प्रसारण के पूर्व गहन जाँच की आवश्यकता है जिससे सामाजिक विघटन के कार्यक्रम प्रसारित न हो सके।
- (4) तकनीकी संसाधनों और मोबाइल पर होने वाले दुष्परिणामों के बारे में अभिभावकों, समाजसुधारकों तथा शिक्षकों को युवाओं और विद्यार्थियों को अवगत कराना चाहिए।
- (5) भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय में एक बोर्ड का गठन होना चाहिए, जो देश में संस्कारित तथा भारतीय सभ्यतानुकूल शैक्षिक वातावरण होना सुनिश्चित कर सके।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :-

- (1) भारतीय शिक्षा की समस्याएँ पी.डी. पाठक
- (2) भारतीय शिक्षा एवं सामाजिक संरचना— रितिका छपरा—2022
- (3) राष्ट्रीय निर्माण एवं शिक्षा— कृष्ण कुमार—सेज पब्लिकेशन
- (4) आल इण्डिया सर्वे ऑफ हायर एजुकेशन—2023—24
- (5) भारत में निजी विद्यालयों में शिक्षा—अमरेश दुबे —2008